Vol 6 Issue 3 April 2016

ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad.

Mr. Dikonda Govardhan Krushanahari
Professor and Researcher ,
Rayat shikshan sanstha's, Rajarshi Chhatrapati Shahu College, Kolhapur.

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.org

ISSN: 2230-7850 Impact Factor : 3.1560(UIF) Volume - 6 | Issue - 3 | April - 2016

Indian Streams Research Journal

हिंदी गद्य साहित्य में आदिवासी चित्रण

पतकी प्रतिज्ञा प्रमोद
हिंदी विभाग अध्यक्ष , रा.ब.नारायणराव बोरावके महाविद्यालय,
श्रीरामपूर जि. अहमदनगर.

प्रस्तावना :–

प्रस्तुत आलेख का विषय हैं ' हिंदी गद्य साहित्य में आदिवासी चित्रण ' । इस विषय में विचारणीय बिंदू है आदिवासी जीवन । जब हम आदिवासी जीवन पर विचार करेंगे तो सबसे पहले आदिवासी किसे कहते हैं यह जान लेना उचित होगा ।

नालंदा विशाल शब्दसागर में 'आदिवासी ' शब्द का अर्थ दिया है–मूल निवासी । किसी प्रदेश या राज्य का मूल निवासी,आदिम निवासी । पर जब हम आदिवासी लोग, आदिवासी संस्कृति, आदिवासी जीवन कहते हैं तब उससे मात्र मूल निवासी या आदिम निवासी यह अर्थ अभिप्रेत नहीं हैं । 'आदिवासी ' इस शब्द का जो अर्थ हम लेते हैं तथा समाज में जो अर्थ प्रचलित हैं वह यह कि आदिवासी समाज याने जो शहरी सभ्यता से दूर रहता हैं,विकास की दृष्टि से,आधुनिकता की दृष्टि से जो समाज पिछड गया है,जिसकी अपनी विशिष्ट बोली है,पहाडों में,जंगलों में,दुर्गम प्रदेश में कबीलाई जावन जीनेवाला जो वर्ग है उसे हम आदिवासी कहकर जानते हैं । शहरी सुख–सुविधओं से वंचित रहनेवाले ये आदिवासी लोग गरीब,अनपढ,कुपोषणग्रस्त होते हैं । साथ ही वे अंधश्रध्दालु भी होते हैं । आदिवासी को ही हम जनजातियाँ भी कहते हैं । भारतीय संविधान में भी आदिवासियों को अनुसूचित जनजाति ही कहा गया है । इन आदिवासियों में उपजातियाँ भी अनेक होती हैं । उनकी प्रत्येक की बोली भी भिन्न होती हैं । प्रत्येक जनजाति के अपने अपने खान–पान,केशभूषा,वेशभूषा होती है । आदिवासी लोग जंगल के फल–कंदमूल खाकर ही अपनी जीविका चलाते हैं , तथा पशु–पंछियों का शिकार करते हुए अपनी जीविका चलाते हैं । आज कुछ आदिवासी लोग शहरों में जाकर काम करने लगे हैं तथा खदाने–कारखानों में काम करने लगे जिस कारण पिछडा हुआ यह समाज विकास के मार्ग पर चल पडा है,उनमें जागृति आ रही है । कुछ आदिवासी तो अपने हक के लिए आंदोलन भी कर रहे हैं– जैसे नागा आंदोलन, भिल्ली आंदोलन, संथाल आंदोलन आदि । भारत सरकार ने भी इन आंदोलनों की खबर लेते हुए नागालैंड, मिजोरम, मेघालय तथा झारखंड जैसे राज्य स्थापित कराए हैं । सरकारी क्षेत्र में आदिवासियों का आरक्षण सुरक्षित रखा गया है । इससे स्पष्ट होता है कि आदिवासी कालानुरूप परिवर्तित हो रहे हैं ।

कुछ आदिवासी लोग तो शहरों में बसकर वहाँ की आधुनिक संस्कृति में पूरी तरह घुल मिल गए हैं । परंतु अभी भी बहुत सा आदिवासी समाज उसी प्रकार पिछडी स्थिति में,आदिम स्थिति में जी रहा है । अनेक साहित्यकारों ने इन आदिवासियों के जीवन पर प्रकाश डालते हुए लेखन किया है । आदिवासियों पर लेखन करते समय इन साहित्यकारों ने आदिवासी जीवन का पुरा परिचय दिया है । उनका जीवन नजदीक से देखा बाद में उसपर लिखा है जिस कारण आदिवासियों का यथार्थ जीवन दर्शन उनके साहित्य में हमें मिलता है ।

अब प्रश्न यह निर्माण होता है कि यह आदिवासी साहित्य लेखन कबसे प्रारंभ हुआ ? किसने इसकी शुरूआत की ? इन प्रश्नों पर विचार करते समय दलित साहित्य की याद आती है । आज दलित साहित्य का बोलबाला है,तो क्या दलित साहित्य बीसवीं शती के अंतिम दो दशकों की देन है ? क्या उसके पहले दलितों पर लिखा नहीं गया । प्रेमचंद 'सद्गति ' कहानी में दलितो पर होनेवाले अत्याचारों की चरम सीमा है । इसका अर्थ यह है कि दलितों पर पहले भी लिखा गया था मात्र उसे दलित साहित्य

कहकर संबोधित नहीं किया गया । ठीक यहीं बात आदिवासी साहित्य के बारे में भी हैं । आदिवासी साहित्य तथा आदिवासी आंदोलन की आज जोरदार चर्चा है पर आदिवासी साहित्य इक्कीसवीं सदी की उपज नहीं हैं । पहले साहित्यकारों ने भी आदिवासियों का चित्रण किया है । जैसे-

रांगेय राघच जी का 'कब तक पुकारूँ ' यह उपन्यास राजस्थान के भरतपुर जिले के वैर गॉव में रहनेवाली 'करनट' जनजाति के जीवन पर आधारित है । करनट नटों की एक उपजाति है । नटों के समान करनट भी जयरामपेशा कहे जाते हैं । जयरामपेशा लोग एक जगह पर बसते नहीं है,खेती बाडी नहीं करते । साधन हीन और विपन्न स्थिति में ही ये जीते हैं । पैसे के लिए ये अपनी स्त्रियों से वेश्या धंधा भी करवाते हैं । ठाकुर,दरोगा,पुलिस,ब्राह्मण आदि सभ्य कहलानेवाले लोगों की करनट स्त्रियॉं विवश होकर भोग्या,रखैल बन जाती है । अनपढ ऐसे करनटों पर चोरी आदि का इल्जाम लगाकर पुलिस रोज एक न एक को हिरासत में लेती है फिर उसे छुडा लाने के लिए उसके घर की किसी नारी को पुलिस के साथ शरीर का सौदा करना पडता है । पैसे के लिए शरीर बेचनेवाली करनटों की नारी अपने प्रेमी को किसी दूसरे के साथ बिल्कुल सह नहीं पाती । प्यार के संबंध में समझौता वे बिल्कुल नहीं करती । सुखराम जब कजरी से संबंध जोडता है तब प्यारी गुस्सा जताती है उस समय सुखराम उसे कहता है,'' यदि तू अनेक मर्द कर सकती है तो क्या मैं दो लुगाई तक नहीं रख सकता ।''१ तब प्यारी कहती है,'' मैंने एक किया है, वह तू है । बाकी के पैसे कमाने के लिए थे । उनको मैंने दिल नहीं दिया । पर तूने कजरी को दिल दे दिया है । तन बॅट सकता है मेरे राजा, मन नहीं बॅट सकता ।''२ इस प्रकार अनेक मर्दों के साथ रहते हुए भी वह खुद को मात्र सुखराम की ही समझती है। वह सुखराम से कहती है,'' तुम मेरे हो, मैं तुम्हारी हूँ । बस यहीं एक बात मेरे दिल की है । बाकी सब बातें दुनियादारी की हैं ।''३ और सुखराम भी उसपर जान छिडकता है । सभ्य समाज की समझ में न आनेवाली इन दोनों के अनोखे प्यार की पार्श्वभूमि में आदिवासियों का भोलापन,उनका अज्ञान, पुलिस, ठाकुर द्वारा उनपर हानेवाला अत्याचार आदि सबका यथार्थ वर्णन किया है जो आदिवासियों के जीवन पर प्रकाश डालता है ।

' धरती मेरा घर ' इस दूसरे उपन्यास में रांगेय राघच जी ने राजस्थान के लोहपिटे नामक जनजाति के लोगों के जीवन पर प्रकाश डाला है । इस उपन्यास में जमींदार के बेटे को उसकी छोटी अवस्था में बघेरा उठाकर जंगल ले जाता है । जमींदार के कहने पर नौकर जंगल में जाते हैं पर वहॉं से गलती से लोहपिटे के बच्चे को ही जमींदार का बेटा समझकर ले आते हैं उसी समय जमींदार की पत्नी की मृत्यु हो जाने के कारण बेटे के बदली हो जाने की बात पर पर्दा पड जाता है । लोहपिटे का बच्चा जमींदार के बेटे के रूप में बडा होता है । बडा हो जाने पर उसके जाति का भंडाफोड हो जाता है तब कृष्णकुमार जमींदार का घर छोडकर लोहपिटों की बस्ती में चला जाता है । पर वहॉं अपने ही जन्मदाता पिता को स्वीकारना उसके लिए कठिन होता है ।उसे बार-बार जमींदार पिता का चेहरा याद आता है । सभ्य समाज में रहने के कारण लोहपिटों के जंगली जीवन को वह स्वीकार नहीं कर पाया और बीमार होकर वह इस दुनिया को छोड देता है ।

वैसे रांगेय राघच जी के ये दोनों उपन्यास ऑंचलिक उपन्यास के खाते में डाले गए हैं पर उसमें करनट और लोहपिटे जनजातियों का चित्रण आया है । इसलिए मेरी दृष्टि से इन दोनों उपन्यासों में आदिवासी चेतना है ।

आदिवासी चेतना से युक्त जो साहित्य अब तक लिखा गया है उन सब में साहित्यकारों ने ईमानदारी के साथ आदिवासियों के अभावग्रस्त, पीडित जीवन को समाज के सामने रखा है ।जंगलों,पहाडों, गॉव से बाहर,दूर बस्ती करके बसनेवाले ये आदिवासी रोटी,कपडा,मकान इन मुलभूत जरूरतों से भी वंचित हैं । शिक्षा,संस्कारों से अपरिचित इन लोगों का सरकारी अधिकारी,पुलिस,जमींदार,ठाकुर,पुजारी आदि तथाकथित सभ्य लोगों द्वारा होनेवाला शोषण इन साहित्यकारों ने स्पष्ट किया है ।''कब तक पुकारूँ''इस उपन्यास के सुखराम के मुख से इन आदिवासियों के जीवन पर 'रांगेय राघव 'जी ने कितना सही प्रकाश डाला है -

'हमारे पास जमीन नहीं,कुछ नहीं ।
आसमान के नीचे सोते हैं, धरती हमारी माता है ।
हम घास की तरह पैदा होते हैं ।रौंदे जाते हैं ।
हमारी औरतों को पुलिस के सिपाही दूब समझकर
चर जाते हैं । और फिर हमारे पास क्या है?
कुछ नहीं ।''४

आदिवासियों के जीवन पर लिखनेवाले साहित्यकारों में उल्लेखनीय हैं तेजिंदर, सोनह शर्मा, मैत्रेयी पुष्पा, संजीव, राजेंद्र अवस्थी, डॉ.शिवप्रसाद सिंह ,महुआ मांझी, राकेशकुमार सिंह, विजय, जयशंकर, मेहरून्निसा परवेज, श्री.प्रकाश मिश्र आदि । इनमें से कुछ साहित्य का परिचय लेना असंगत नहीं होगा ।

'मरंगगोडा नील कंठा हुआ ' यह ' महुआ मांझी ' का उपन्यास है । महुआ मांझी स्वयं आदिवासी है । उन्होंने झारखंड के सिंहभूमि में जो क्षेत्र मरंगगोडा नाम से जाना जाता है रहनेवाले आदिवासी जनजीवन का चित्रण किया है । मरगोंडा के जंगलों में सुख-शांति से रहनेवाले संथाल और हो जनजातियॉं सरकार ने आज विस्थापित कर दी है । क्योंकि मरगोंडा की भूमि में कोयला, लोहा, तांबा, युरेनियम की खोज हुई और फिर इनके खदाने बनवाने के लिए सरकार ने वहॉं के मूल निवासियों को अर्थात आदिवासियों को विस्थापित कर दिया और उनकी सुखपूर्ण जिंदगी त्रासदी में बदल दी । सरकारी अफसर, पुलिस, राजनीतिक नेताओं द्वारा होनेवाला आदिवासियों का शोषण महुआ मांझी ने यथार्थ रूप में उभारा है ।खदानों के कारण जंगल नष्ट हुए जिस कारण वहॉं के आदिवासी अपना पेट भरने के लिए खदानों में मजदूरी करने के लिए विवश हुए और अनेक बीमारियों के शिकार

हुए । युरेनियम का विपरित परिणाम मात्र मनुष्य ही नही तो जंगली जीव-जंतु, पशु-पंछी,पेड-पौधों पर पडता है जिस कारण जंगल खतरे में आ गए हैं । इस वास्तवता को मांझी ने अपने उपन्यास में दिखाया है ।

संजीव के 'पॉव तले की दूब ' इस उपन्यास में झारखंड के पंचपहाडी क्षेत्र में स्थित आदिवासियों के जीवन का चित्रण है । इस प्रदेश के बढते हुए औदयोगीकरण के जहरीले प्रदूषण के कारण आदिवासी बस्तियॉ, उनके खेत, जंगल और जल पर गंभीर दुष्परिणाम हो रहा है । वहॉ जो विद्युत प्रकल्प है उसका गंदा पानी मनसा नाले में छोडा जाता है, जो वहॉ के आदिवासियों के पीने के पानी का एकमात्र स्त्रोत है, साथ ही वहॉ की चिमनी जहरीला गैस छोडकर पूरे इलाके को काला कर रही है इन सबके परिणामस्वरूप आदिवासी स्त्री-पुरूष लूले-लंगडे एवं लकडवे की बीमारी से ग्रस्त है । जिनकी जमीन पर ये प्रकल्प खडे हुए उन आदिवासियों के विस्थापित होने पर उनकी कोई व्यवस्था नहीं की गई । इसी कारण वहॉ के किसी जमाने के टोकरी और मकरा नामक गॉवों का आज नामोनिशान तक नहीं है । गॉव के लोग कहॉ गए किसी को कुछ मालूम नहीं । इन आदिवासियों के लिए संघर्ष करनेवाला सुदीप्त इन आदिवासियों के जीवन में परिवर्तन लाने में असफल होता है और निराश होकर अंत में आत्महत्या कर लेता है । आदिवासी आखिर पॉव तले की दूब तो है कोई भी आए और उसे कुचलते हुए आसानी से आगे निकल जाता है और यह दूब बेचारी वहीं की वहीं पडी रहती है और चुपचाप कुचलती जाती है ।

डॉ.शिवप्रसाद सिंह द्वारा लिखित 'शैलूष' उपन्यास नटों के जीवन पर आधरित है । जीवन जीने के लिए पानी और रोटी चाहिए पर वह भी इनके नसीब नहीं । गंदे तालाब का पानी पीकर वे अपनी प्यास बुझाते हैं तो खाने के लिए तीन-तीन दिन तक उन्हें कुछ नहीं मिलता । छोटे बच्चे रोटी के लिए रोते रोते सो जाते हैं । गरीबी, भूख में जी रहे ये नट लोग यायावर की जिंदगी जीते हैं । खेल तमाशे दिखाकर, महुए, पलाश, बरगद के पत्ते बेचकर, कुछ दवाइयॉ बेचकर जीवन संघर्ष कर रहे हैं । सरकार की ओर से नटों को जमीन मिली है पर उस जमीन को भी ब्राह्मण घुरफेंकन तिवारी हडपना चाहता है । इससे स्पष्ट होता है कि सभ्य समाज ना इन्हें अपनी जमीन पर शांति से जीने देता है और ना सरकारी सुविधाओं को उनतक पहुँचने देते हैं ।

उपन्यासो के समान हिंदी कहानियों में भी आदिवासियों का चित्रण मिलता है । जैसे-

राकेश कुमार सिंह ने 'अरण्य रात्रि की महक' कहानी में मुंडा आदिवासियों का अशिक्षा के कारण होनेवाले शोषण को व्यक्त किया है ।

विजय द्वारा लिखित 'जंगल का सपना' इस कहानी में सरकारी अधिकारियोंद्वारा आदिवासियों का दमन स्पष्ट किया है । जंगल तोडकर सरकारी लोग वहॉ इमारतें बना रहे हैं । जिस कारण उस जंगल के आदिवासियों को वहॉ से हटा दिया गया है । आदिवासी लोग अपने जंगल को बचाना चाहता है क्योंकि जंगल ही उनके जीवन का सहारा था । पर सरकारी अधिकारी उनका विरोध करनेवालों को झूठे इल्जाम लगाकर गिरफ्तार कर लेते हैं और तब उन्हें रिहा कर दिया जाता है जब उनका स्वार्थ पूरा हो गया अर्थात जंगलों को काटकर इमारतें बना दी गयी थी । अब जंगल सपना बनकर रह गया था ।

जयशंकर ने 'भ्रमुंडा' कहानी में आदिवासियों में व्याप्त धार्मिक विश्वासों का वर्णन किया है ।

मेहरून्निसा परवेज ने भी अपनी कानीबाट,टोना,सूखी बयडी आदि कहानियों में बस्तर की जनजातियों का चित्रण किया है ।

उपन्यास हो या कहानी दोनों में साहित्यकारों ने आदिवासियों का जो चित्रण किया है उस चित्रण में आदिवासियों के संबंध में कुछ खास बातें समझ में आती है -

- आदिवासियों ने पुलिस, दरोगा, सरकारी अधिकारी, पुजारी आदि लोगों पर अपनी ओर से कभी आक्रमण नहीं किया है । पहल तथा छेडछाड इन तथाकथित सभ्य समाज द्वारा हुई है और सजा आदिवासियों को मिली वह भी छेडछाड करनेवालों से ।
- आदिवासियों पर अतिक्रमण सभ्य, शहरी लोगों ने किया है । आदिवासियों ने कभी भी सभ्य लोगों की बस्ती की ओर ऑख उठाकर नहीं देखा । उन्होंने कभी सभ्य लोगों की युवती या औरतों को अपनी हवसका शिकार बनाया है । शहरी सजी धजी युवतियों को देखकर इनकी वासना कभी भडक नहीं उठी ।

आदिवासी तो बेचारे अपने जंगल में ही मंगल करना चाहते हैं । जंगल ही उनका सब कुछ है । 'चक्रव्युह' फिल्म के गीत में भी ये आदिवासी कहते हैं--

जंगल ही हमारा बाप है
नदी हमारी मैया है ।

- वास्तव में देखा जाए तो इन्हीं आदिवासियों के कारण हमारे जंगल सुरक्षित हैं, जंगल के नदी नाले झरनों को इन्होंने प्रदुषित नहीं किया है । अपनी बस्ती बसाने के लिए उन्होंने जंगल तोडे नहीं है । जंगल में अपनी जीविका चलाते समय उन्होंने जंगल से उतना ही लिया जितना उन्हें आवश्यक था । जब जब सभ्य लोगों ने जंगलों को तोडना चाहा तब तब उन्होंने अपनी जान पर खेलकर जंगलों को बचाने की कोशिश की ।
- जंगल में रहकर भी आदिवासी जंगली नहीं बने । जंगल के पशुओं के साथ रहकर उन्होंने मानव के साथ पशु जैसा व्यवहार नहीं किया । पर तथाकथित सुशिक्षित, सभ्य लोगों ने उनके साथ पशुता का व्यवहार किया ।प्रकाश आमटे की फिल्म में आदिवासी स्त्री अपने छोटे से शिशू को सासू मॉ के हवाले करते हुए दरोगा की वासना शांत करने जाती है क्योंकि उसके पति को दरोगा ने हवालात में रखा था ।इस प्रकार हम देखते हैं कि हम सभ्य लोगों ने ही आदिवासियों के जीवन में खलबली मचा दी है । आदिवासी कभी हमारे जीवन में दखल देने नहीं आए । हॉ ! अब कुछ आदिवासी नक्स्लवादी बन गए पर कब?जब उनपर आक्रमण हुए, उनकी पत्नी,बहू-बेटियों को सभ्य सोगों ने अपनी वासना का शिकार बनाया ।उनके अज्ञान का फायदा उठाया ।सहनशीलता की भी एक मर्यादा होती है, जब बात मर्यादा से बाहर होती है तब कोई 'बॅडेड क्वीन ' बनती है इस बात

को हमें ध्यान में लेना चाहिए ।

- हजारों सालों से जंगल में अपनी मस्ती में जीनेवाली इन आदिवासियो के शांतिपूर्ण जीवन में कभी जंगल,जल और जमीन का राष्ट्रीयीकरण करने के बहाने तो कभी खनिज संपत्ति प्राप्त करने के बहाने सरकार, दलाल,पूँजीपतियों ने बार बार हस्तक्षेप किए हैं और उनके शांतिपूर्ण जीवन में खलबली मचा दी है ।

संदर्भ सूचि :–

१.कब तक पुकारूँ -- डॉ. रांगेय राघव पृ.क्र. ८६
२.कब तक पुकारूँ -- डॉ. रांगेय राघव पृ.क्र. ८६
३.कब तक पुकारूँ -- डॉ. रांगेय राघव पृ.क्र. ६२
४.कब तक पुकारूँ -- डॉ. रांगेय राघव पृ.क्र. १६२

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.org